टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

एम. ए. हिंदी, (भाग-१)

मई २०१० परीक्षा

विषय :विशेष साहित्यकार-उपन्यासकार प्रेमचंद (H-104)

दिनांक : २१/५/२०१० **कुलअंक : १००** **समय : प्रात: १०.०० से दो. १.००**

सूचनाएँ : १. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।
२. सभी प्रश्नों के लिए समान अंक हैं ।

प्रश्न १. अ) पठित उपन्यास के आधार पर उसकी नायिका जालपा का सविस्तार चरित्र-चित्रण कीजिए। **(२०)**

अथवा

ब) पठित उपन्यास के आधारपर उसकी नायिका 'सुमन' का सविस्तार चरित्र-चित्रण कीजिए।

प्रश्न २. अ) आपकी राय से प्रेमचंद कालीन कौन सी समस्याएँ आज भी समाज में मौजूद हैं?सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। **(२०)**

अथवा

ब) 'अपने विचार लोगों के सामने रखने के लिए प्रेमचंदजी ने 'लोकभाषा' को अपनाया है' अपना मत स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ३. अ) 'उपन्यासों का निर्माण करने के बहाने प्रेमचंदजी ने देशसेवा की है' इस कथन की चर्चा कीजिए। **(२०)**

अथवा

ब) प्रेमचंदजी के उपन्यासों में अभिव्यक्त 'गांधीवाद' का विवेचन कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित संदर्भों में से किन्हीं दो संदर्भों की व्याख्या कीजिए। (२०)

१) ''गालियों का उत्तर मौन है। गालियों का उत्तर गाली तो मूर्ख देते हैं, फिर उनमें और तुममें अंतर ही क्या है?''

२) ''ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि मेरा पुनर्जन्म आपके गर्भ से हो; जिससे मैं आपके ऋणसे उन्ऋण हो सकू।''

३) ''तुमने सदैव मुझे परीक्षा की आँखों से देखा कभी प्रेमकी आँखों से नहीं।
नारी परीक्षा नहीं, प्रेम चाहती है'' ।

४) 'जिसने धन और पद के लिए अपनी आत्मा बेच दी उसे मैं मनुष्य नहीं समझती'।

प्रश्न ५. किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए। **(२०)**

१) रंगभूमि में वर्णित समस्या ।
२) सूरदास।
३) प्रेमचंद की सुखी परिवार की कल्पना ।
४) नारी जाति और गहनों का आकर्षण।